04 / 07 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्व-स्थिति की श्रेष्ठता से व्यर्थ संकल्पों की हलचल समाप्त होने का अनुभव

➢➢ स्व-स्थिति की चेकिंग

➳ _ ➳ मैं आत्मा सेण्टर में श्री लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने बैठ चित्र को निहार रही हूँ...

→ मैं आत्मा चिन्तन करती हूँ की मुझे भी इनके जैसा बनना है...

→ मम्मा-बाबा तीव्र पुरुषार्थ कर श्री लक्ष्मी, श्री नारायण बनें हैं...

■ मम्मा-बाबा अटल निश्चय और निश्चिन्त होकर सदा ही नशे में रहते थे की कल्प-कल्प ये बनें हैं... और बनेंगे...

▶ उनके संकल्पों में जरा भी हलचल नहीं थी...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी स्थिति की चेकिंग करती हूँ की-

→ क्या मैं आत्मा कमजोर संकल्पों के कारण हलचल में आ जाती हूँ...?

→ क्या मैं आत्मा असफलता के भय से माया के वश हो जाती हूँ...?

→ भय के कारण क्या मैं समय और शक्तियाँ व्यर्थ तो नहीं गँवाती हूँ...?

→ क्या मैं आत्मा ईश्वरीय नियम व मर्यादाओं का पालन करती हूँ...?

→ कोई भूल या किसी मर्यादा का उल्लंघन होने से क्या मैं आत्मा उसे बाबा से छिपाती हूँ...?

→ भय के कारण झूठ तो नहीं बोलती हूँ...?

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को भी मम्मा-बाबा समान निश्चिन्त और अटल निश्चय होकर रहना है...

→ भय के भूत को बुद्धि से भगाना है...

➢➢ श्रेष्ठ स्थिति से कमजोर संकल्पों की समाप्ति...

➳ _ ➳ मैं आत्मा कमजोर और व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करने पहुँच जाती हूँ... सर्व शक्तिवान बाबा के पास परमधाम...

→ सर्व शक्तिवान बाबा से निकल रही लाल रंग की किरणें मुझमें समा रही है...

■ मैं आत्मा इन किरणों से सराबोर हो रही हूँ...

■ मुझ आत्मा में बाबा की सर्व शक्तियां समा रही है...

▶ मुझ आत्मा से सारे भय बाहर निकलते जा रहे हैं...

▶ सारे कमजोर और व्यर्थ संकल्प समाप्त हो रहे हैं...

▶ मैं आत्मा मास्टर सर्व शक्तिवान होने का अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ फिर मैं आत्मा धीरे-धीरे नीचे उतर रही हूँ... और पहुँच जाती हूँ सूक्ष्म वतन में...

→ बापदादा वरदान देते हैं...

- निश्चय बुद्धि भव..
- सफलतामूर्त भव..
- मायाजीत भव..

➳ _ ➳ फिर बापदादा एक सीन इमर्ज कर मुझे दृश्य दिखाते हैं...

→ मैं आत्मा सतयुग में सिंहासन पर विराजमान हूँ...

→ दैवीय गुणों से संपन्न देवता स्वरुप में अत्यंत मनोहारी लग रही हूँ...

→ सम्पूर्ण वैभव और सम्पन्नता से भरपूर हूँ...

➳ _ ➳ हर कल्प में मैं आत्मा ब्राह्मण से देवता बनी हूँ...

→ 16 कलाओं से सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम ये मुझ देवता का ही गायन है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने भविष्य स्वरुप को देख अटल निश्चय और निश्चिंतता से भरपूर हो रही हूँ...

→ अब स्वयं में संशय का संकल्प जरा भी नहीं है...

→ मुझ आत्मा की बुद्धि में ये स्मृति स्पष्ट होती जा रही है कि मुझ श्रेष्ठ आत्मा ने ही विजयी बनने का पार्ट अनेक बार बजाया है...

- और अब भी बजा रही हूँ इसमें कोई मुश्किल नहीं है...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा का मन शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्पों से भर रहा है...

→ ये तन, मन, धन सबकुछ बाबा का ही दिया हुआ है...

→ सर्व शक्तियां, समय, श्वांस, सर्व खजाने बाबा की ही अमानत है...

→ ये प्रभु प्रसाद है... इन पर मेरा हक़ नहीं है...

→ बाबा का दिया हुआ सबकुछ बाबा को ही समर्पित कर रही हूँ...

- सब कुछ ईश्वरीय सेवा में लगा रही हूँ... विश्व के कल्याण में लगा रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सारे बोझ बाबा को देकर हल्का अनुभव कर रही हूँ...

→ श्रेष्ठ संकल्पों से वायुमण्डल और वातावरण को शुद्ध कर रही हूँ...

- अब कोई भी व्यर्थ या कमजोर संकल्प माया के रूप में मेरे पास नहीं आ सकते हैं...
- मैं आत्मा मायाजीत होने का अनुभव कर रही हूँ...
  - ▶ स्मृति स्वरुप और समर्थी बन निशाने के समीप पहुँच रही हूँ...